देखते देखते विश्वस्तर की आर्यसमाज कैसे बनी ?

स्व. लालजीभाई गोहिल ने पाकिस्तान से निर्वासित होकर आए आर्य परिवारों को तथा रेलवे से जुड़े आर्य परिवारों के लोगों को साथ लेकर आर्यसमाज गांधीधाम की स्थापना १८ मार्च १९५४ को की थी । स्व. श्री डुंगरोमल जेसवानीजी आर्यसमाज गांधीधाम के मंत्री रहे एवं स्व. श्री मानमलजी जोषी ''श्रीमद् दयानन्द विद्यालय'' के आचार्य बने । उस समय प्रवृत्तियाँ समय के अनुसार चलती रही और काफी उतार चढ़ाव आए १९६९ में श्रीमद् दयानन्द विद्यालय आर्थिक कठिनाइयों के कारण बन्द हो गया । १९७९ में श्री लालजीभाई गोहिल व श्री डूंगरोमल जेस्वाणी परिवार क्रमशः राजकोट व नडियाद चले गये । कुछ समय श्री वालजीभाई पटेल व श्री वस्ताराम टांक क्रमशः प्रधान व मंत्री बने रहे १९८४ में श्री मोतीराम जेसवानी जी प्रधान बने । १९८६ में उन्हों ने आदिपुर स्थित आचार्य रामचन्द्रजी के आर्य परिवार को आर्यसमाज गांधीधाम से जुड़ने का निमंत्रण भेजा - बस यहीं से परिवर्तन की शुरुआत हुई ।

०६ जुलाई १९८६ को मैं वाचोनिधि आर्य अपने पूज्य माता-पिता के साथ प्रथम बार आर्यसमाज गांधीधाम के सत्संग में शामिल हुआ । शक्ति से भरे २५ वर्षीय युवक होने के नाते मेरे मन में आर्यसमाज के बारे में कई सपने थे पर वे पूरे होते नहीं दिख रहे थे । बूढ़े-बूढ़े पांच सात व्यक्ति सत्संग में उपस्थित थे, कोई उत्साह नहीं था, आपसी छींटाकशी चल रही थी, भवन की मात्र दीवारें ही थी, भवन में एक पंखा या दो ट्यूबलाइट भी नहीं लगीं थीं, टूटा-फूटा अपर्याप्त फर्नीचर था, सबकुछ धूल खा रहा था, सबकुछ शिथिल सा था । मैं ये सब देखकर निराश नहीं हुआ था क्योंकि युवक था व कुछ कर दिखाने की तमन्ना थी व विश्वास था कि पुरुषार्थ से, लगन से सब ठीक हो जाएगा । मैंने अपने सपनों को साकार करने के लिये छोटे-छोटे कदम उठाए, तुरन्त महापुरुषों के चित्र लगवाए तथा यज्ञशाला का सौंदर्यीकरण किया । करीब १००० रु. खर्च हुए जिसका श्री मोतीराम जेसवानी व श्री कोडूमल आर्य ने समर्थन किया तब से मेरा उत्साह बना, बस मैं आगे ही आगे कार्य करता रहा । १९८६ से २००८ तक आर्यसमाज गांधीधाम ने क्या प्रगति की है तथा यह प्रगति क्यों व कैसे हो सकी है इसका विवरण आप आगे पढ़ पाएँगे।

समयदान :

यह बात निश्चित है कि, सबकुछ पैसे से नहीं हो सकता इसके लिये समयदानी व्यक्ति होने चाहिये । श्री पुरुषोत्तमभाई पटेल इस आर्यसमाज के प्रधान हैं । उनके नेतृत्व में १९९५ से विशेष प्रगति हो रही हे तथा उनकी पूरी टीम किसी भी कार्य के लिये पर्याप्त समय निकाल कर दौड़धूप करती है । मैं वाचोनिधि आर्य प्रतिदिन कम से कम सात-आठ घंटे का समय बैंक की नौकरी के उपरांत ३६५ दिन इस कार्य हेतु देता हूँ । मुझे मिलने वाली सारी छुट्टियाँ आर्यसमाज के कार्य में ही खर्च हो जाती हैं । भूकंप में एक माह अवैतनिक छुट्टी ली कारण कि, छुट्टियाँ जमा नहीं थीं ।

व्यावहारिक सूझबूझ:

आपस में सौम्य, सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखने व व्यावहारिक सूझबूझ के कारण संस्था विशेष प्रगति किया करती है । आपसी 'अहम्' न रखना व उसे टकराने न देना यह भी सूझबूझ का हिस्सा है । आपसी गुणों को देखना, दोषों को नजरअन्दाज करना भी हमारी प्रगति में सहायक हुआ है । सभी को साथ लेकर चलना उनसे विचार-विमर्श कर उन्हें संतुष्ट करना भी सूझ-बूझ का हिस्सा है । बड़ों को सम्मान देना उनकी बात मानकर चलना भी आर्यसमाज गांधीधाम की परम्परा रही है । सुमति से चलना, पारिवारिक भावना से चलना हमारा बहुत बड़ा गुण रहा है । हमसे जुड़ा निःस्वार्थी व्यक्ति कभी हमसे अलग नहीं हो पाया है ।

पूर्णनिष्ठा :

आर्यसमाज गांधीधाम का कार्य हम पूरी लगन, निष्ठा व ईमानदारी से करते हैं । हमारी पूरी टीम का कोई निजी स्वार्थ नहीं है । संस्था को हम क्या दे सकते हैं ? इस बात का ही ध्यान रहता है ।

हम सभी पदाधिकारी दान देने की आदत बनी रहे इसलिये हर माह एक मुश्त रकम आर्यसमाज को दान में देते हैं । भवन निर्माण आदि में बड़ीबड़ी रकमें हम स्वयं देते हैं उसके बाद दानदाताओं के पास जाते हैं । मैं वाचोनिधि आर्य हवन की समस्त दक्षिणा आर्यसमाज गांधीधाम को दे देता हूँ । सन् २००३ की वर्ष भर की दक्षिणा करीब एक लाख अठारह हजार हुई थी ।

पारदर्शिता :

समय समय पर विघ्नसंतोषी तत्वों ने अपने स्वभाव अनुसार गलतफहमियाँ फैलाकर हमारे कार्य में रोड़े डालने चाहे, लेकिन जनता ने हम पर लगाए दोषों को बड़े नजदीक से देखा, हमारी ईमानदारी व निष्ठा की ''अग्निपरीक्षा'' की और इस ''अग्निपरीक्षा'' के बाद उनका सहयोग मिलना बन्द हो जाने की बजाय दुगना-तिगुना हो गया क्योंकि, हमने सतत पारदर्शिता रखी है । हमें विदेश व भारत भर से दान मिल रहा है । गांधीधाम की जनता प्रतिमाह करीब दो लाख रुपया बच्चों के पालन हेतु पिछले आठ साल से दे रही है । गांधीधाम की जनता हमारे सारे कार्य व लगन को देखकर दान दे रही है और हमें बड़ी इज्जत के साथ देखती है क्योंकि हमारा सारा कार्य पारदर्शी रहा है, जिसे कोई भी देख सकता है ।

सततप्रवृत्तिमय :

हमने आर्यसमाज गांधीधाम में जहाँ नये-नये भवन बनाये हैं वहीं उनका उपयोग प्रवृत्ति बढ़ाने में किया है । सतत वेद प्रचार की जन

उपयोगी प्रवृत्तियाँ बढ़ाई हैं, जिन्हें आप स्वयं देखते आए हैं । नई-नई प्रवृत्ति को शुरु करना सरल है जबकि उसे चलाते रहना कठिन है । हमने वार्षिक सत्संग समारोह, मेडिकल ऑक्सीजन बैंक, वक्तृत्व स्पर्धा, जीवनप्रभात जैसी अनेक प्रवृत्तियाँ शुरु की हैं जो सफलतापूर्वक आज भी चल रही हैं । हमारा कार्यालय सुबह ८.३० से रात्रि ८.३० तक प्रवृत्तिमय रहता है । हमारे यहाँ कुल ४० कर्मचारी कार्यरत हैं ।

आधुनिक सोच :

हमारे प्रधान श्री पुरुषोत्तमभाई पटेल व पूरी टीम की सोच आधुनिक रही है । हम अपने घरों को तो सुन्दर, स्वच्छ बनाते हैं, अपने कार्यालयों को भी आधुनिक संचार-सुविधाओं से जोड़े रखते हैं, मूलभूत सुविधाओं का विकास करते हैं परन्तु वे ही पदाधिकारी आर्यसमाज भवन को ''अंधेरी कोठरी'' जैसा स्वरूप देते हैं । कार्यालय का कोई स्तर नहीं होता, ढंग के कर्मचारी नहीं रखते, जो ठीक से उत्तर दे सकें । मात्र विवाह अधिक से अधिक होते रहें इसका ध्यान रहता है इस कारण वे आर्यसमाजें प्रगति नहीं कर पाती हैं । हमने शुरु से ही यह ध्यान रखा है कि प्रगति के लिये व्यवस्थित कार्यालय, संचार की सारी सुविधाएं व मूलभूत सुविधाएं चाहिये । पर्याप्त वेतन देकर सुयोग्य कर्मचारी रखें । वेब-साईट, इन्टरनेट, मोबाईल, लेपटोप आदि आधुनिक चीजों से हमारा पूरे विश्व से सतत संपर्क है । १९९६ में जब कम्प्यूटर युग प्रारंभ हुआ ही था तब हमने कम्प्यूटर बसा लिया था और उसके होने के कारण हम तब से विश्व से जुड़े रहे, उसके परिणाम आज हमें मिल रहे हैं।

टांग खिंचाई नहीं-हाथ खिंचाई :

हमारे यहाँ हर कार्यकर्ता, पदाधिकारी जो कुछ भी योगदान करता है, चाहे वह थोड़ा हो या ज्यादा उसका धन्यवाद माना जाता है, उसे और अधिक करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है । उसे किसी काम के न किये जाने की शिकायत करते हुए अपमानित नहीं किया जाता है बल्कि वह यदि सौंपा गया कार्य न कर सका तो उसका कार्य अन्य कार्यकर्ता-पदाधिकारी खुशी-खुशी कर डालते हैं और जो कार्यकर्ता/पदाधिकारी अधिक काम करते हैं उनके कार्य में जो कम सक्रिय कार्यकर्ता व पदाधिकारी हैं वे रोड़े नहीं डालते अर्थात् टांग खिंचाई नहीं करते । सारे कार्यकर्ता-पदाधिकारी आपस में एकदूसरे का टीम बल बनकर काम करने वाले को आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करते हैं (उसका हाथ खींचते हैं)। इसी प्रकार हमारी आर्यसमाज में गुटबाजी है ही नहीं तभी इतना तेजी से विकास हो पा रहा है ।

युवा टीम :

आर्यसमाज गांधीधाम का सबसे बड़ा सौभाग्य रहा है कि, सारे कार्यकर्ता व पदाधिकारी काले बाल वाले युवक हैं जिनका कार्य करने का ढंग, उत्साह सोच निराली है। जो सोचते हैं उस पर तुरन्त अमल कर उसे पूरा कर डालते हैं। हमारी टीम का कभी भी नकारात्मक सोच नहीं रहा है और हम कभी किसी के विरुद्ध नहीं सोचते हैं । रचनात्मक कार्यों से छुट्टी ही नहीं मिलती कि किसी के विरुद्ध बुरा सोच पाएं । हमारी टीम कभी निराश नहीं होती । आशा व आत्मविश्वास से भरी टीम सतत कार्य करने को प्राथमिकता देती है ।

जनसेवा प्रकल्प :

ऊपर लिखित कई सारे गुणों के साथ हमारी सफलता का एक और कारण है जनसेवा प्रकल्प शुरु करना । हमने महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताये मार्ग पर चलते हुए आर्यसमाज के छठे नियम ''शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है'' को लक्ष्य बनाया । शारीरिक उन्नति हेतु योगासन, ओषधीय चिकित्सा प्रवृत्तियाँ, आध्यात्मिक उन्नति हेतु योग शिविर, प्रवचन, सत्संग समारोह, साहित्य वितरण आदि कार्य किये हैं लेकिन सामाजिक उन्नति एक ऐसा विषय है जिसे जितना चाहें बढ़ाया जा सकता है । हम अन्य संस्थाओं की ओर देखें तो वे अपना स्थान सामाजिक सेवा के प्रकल्प चलाकर बनाये हुए हैं ।

हमनें भी मेडिकल ऑक्सिजन बैंक पूरे जिले के लोगों के लिये शुरु की । कंडला के समुद्री तूफान में राहत कार्य किया, कच्छ में आये विनाशकारी भूकंप में राहत व बचाव कार्य किया और भूकंप में अनाथ हुए बालकों को हम पाल रहे हैं । इन सब कार्यों के कारण हमें जनता पर्याप्त धन दे रही है, मान-सम्मान दे रही है और हमें अनेक अवैतनिक कार्यकर्ता मिले हैं जो जनसेवा प्रकल्पों में अपने समय का योगदान कर रहे हैं साथ ही कुछ तो वैदिकधर्मी भी बन गए हैं ।

सुप्रबंधन व्यवस्था:

सुप्रबंधन सबको अच्छा लगता है परन्तु हम प्रायः आर्यसमाज में छोटे कार्यक्रम में भी सुप्रबंधन नहीं कर पाते हैं जबकि अन्य संस्थाओं में ५-५, १०-१० हजार लोगों के लिये सारी व्यवस्थाएं सुनियोजित होती हैं । हम सुप्रबंधन के लिये Homework करने का समय नहीं निकालते इस लिये हमारे कार्यक्रम आकर्षक नहीं बनते । आर्यसमाज गांधीधाम में हम इतनी सारी प्रवृत्तियाँ, इतने सारे प्रकल्प चला रहे हैं, लोग आश्चर्य करते हैं कि इतना सब कैसे हो पाता है ? हम उन्हें टाटा बिरला का उदाहरण देते हैं कि, पूरे भारत में उनके उद्योग हैं और मालिक एक ही है, मात्र सुप्रबंधन से सारे कार्य हो पा रहे हैं । हम भी सुप्रबंधन हेतु स्वयं पर्याप्त Homework करने के लिये समय निकालते हैं । पर्याप्त मात्रा में कर्मचारी रखे हुए हैं और उन्हें पर्याप्त वेतन भी दे रहे हैं । आज कुल चालीस वैतनिक कर्मचारी हैं और प्रतिमाह करीब दो लाख रूपए मात्र वेतन स्वरूप देते हैं । उन बत्तीस परिवारों को रोजीरोटी आर्यसमाज दे रहा है । इसके अलावा १५-२० अवैतनिक कार्यकर्ता-पदाधिकारी जुटे हुए हैं । सभी पूर्ण स्व-अनुशासित हैं ।

गुणवत्तापूर्ण कार्य:

हमारी हर चीज चित्ताकर्षक, भव्य व मजबूत होती है । संस्थाओं में प्रायः लोग सस्ती-घटिया चीजें खरीद लेते हैं फिर उसके रखरखाव के

समय रोते रहते हैं और वे चीजें हमेशा काम न आकर बेकार हो जाती हैं । हम हर चीज अच्छी गुणवत्ता की लेते हैं चाहे उसके लिये दानदाता से कुछ ज्यादा ही दान मांगना पड़े क्योंकि हम जानते हैं कि, दानदाता से आज सौ रुपए की जगह एक सौ दस रुपए मांगे तो वे देंगे परन्तु आपने सस्ते में खरीदने के लिये सौ रुपए की चीज नब्बे में खरीद ली और दानदाता से नब्बे रुपए के लिये परन्तु दानदाता उस चीज के रखरखाव के लिये दान नहीं देगा । इसलिये रखरखाव रहित अच्छी गुणवत्ता की चीज हम एक बार खरीदते हैं । कहते हैं न ''महंगा रोये एक बार सस्ता रोये बार-बार'' । Quality work का एक जीवंत उदाहरण हमारे पास है । एक करोड़ रुपए की लागत से वैदिक संस्कार केन्द्र बना है । भूकंप आया तब तक भवन का पूरा ढांचा बन चुका था व करीब ४२ लाख रुपए खर्च हो चुके थे । यह भवन ६० फुट चौड़ाई का बिना कॉलम पर खड़ा है । भवन पर्याप्त मजबूत था व ईश्वर की कृपा रही कि, भवन गिरा नहीं । आश्चर्य है इतने चौड़े बिना पिलर के भवन को तुरन्त गिर जाना चाहिये था । परन्तु हमने स्वयं खड़े रहकर Quality पर ध्यान दिया था । हम कंजूसी करते तो भवन का ढांचा ३५-३६ लाख में बन गया होता लेकिन भूकंप में अवश्य गिर जाता व हमारे ३५-३६ लाख भी धूल में मिल जाते ।

इसी भवन में जो सभा सदन बना है उसमें करीब एक हजार लोग बैठ सकते हैं । १०० X ६० फुट चौड़े हॉल में प्रतिध्वनि (Echo) की समस्या न रहे इसलिये चार-पाँच लाख रुपए डालकर Accousting कार्य करवाया। ये चार पाँच लाख खर्च न करते तो हॉल प्रतिध्वनि के कारण बेकार हो जाता । आज यह शानदार भव्य हॉल आर्यसमाज की शोभा को बढ़ा रहा है।

मूलभूत सुविधाएँ :

भूकम्प में हमने विशेष रुप से अनुभव किया कि मूलभूत सुविधाएं हों तो कार्य करने की शक्ति कई गुना बढ़ जाती है । वाहन, दूरसंचार की सुविधा, आवश्यक भवन, सुयोग्य कर्मचारी आदि के द्वारा हम अपना कार्य पर्याप्त शक्ति से कर पाते हैं । आज ''वैदिक संस्कार केन्द्र'' के कारण हम अनेक कार्य व प्रवृत्तियाँ बढा पाने में सक्षम हो पा रहे हैं ।हमने भवन के एक इंच हिस्से को कभी किराये पर नहीं दिया, न उसमें दूकाने बनने दीं ।

पैसो पर कभी ध्यान नहीं दिया:

हमने प्रवृत्तियों पर पर्याप्त ध्यान दिया, पैसे कहाँ से आयेंगे ? पैसे नहीं हैं तो काम कैसे करें ? इन सब बातों पर ध्यान नहीं दिया । हमने आर्यसमाज गांधीधाम में आय का मुख्य स्रोत दान को बनाया है, विवाह-संस्कारादि से प्राप्त आय को नहीं । वर्ष में हमारे यहां मुश्किल से २५ विवाह संस्कार होते हैं । हमारा एक अनुभव रहा है कि '' धन के अभाव से कोई काम नहीं रुकता, यदि रुकता है तो काम करने वालों के अभाव से'' हमने अनेक कार्यकर्ता बनाये हैं जो हमारी निधि हैं । हमारे सारे प्रकल्प जैसे वैदिक संस्कार केन्द्र, जीवनप्रभात आदि बनाने के लिए हमने पहले धन नहीं मांगा अपितु निर्माण शुरू किया उसके बाद लोगों से धन माँगने गये और निर्माण पूर्ण होता गया । हम Zero Funds से शुरु करते हैं व प्रकल्प पूर्ण होने पर सारा Fund Zero कर देते हैं । हमारी आर्यसमाज में Fix Deposit हम नहीं बनाते न बनने देते हैं क्योंकि FDR ही कुर्सी की लडाई का कारण बनती है । हम हमेशा १५-२० लाख रुपये के कर्ज के नीचे दबे रहते हैं पर बिना चिंता के उत्साह से काम करते रहते हैं ।

Charity begins at Home :

हम प्रति वर्ष लाखों रूपये का दान प्राप्त करते है पर हमारा हर पदाधिकारी, हर सदस्य, हर स्टाफ कर्मचारी अपनी आय में से कुछ न कुछ दान देता है । हर प्रकल्प के लिए हम दान पहले स्वयं देते है फिर अन्यों के पास जाते है । हर पदाधिकारी वर्ष में १० से २५ हजार रूपये तक का दान तो अवश्य देता ही देता है ।

अनुकरणीय स्वभाव :

हम जहाँ से जो भी अच्छा मिलता है उसे ग्रहण करते हैं । आर्यसमाज के सिद्धांतों का पालन करते हुए हम अन्य संस्थाओं के कार्यो में जो अच्छा लगता है उसे तुरंत अपना लेते हैं क्योंकि अन्य संस्थाओं में समर्पण भावना, सुव्यवस्था, भव्यता आदि अनेक गुण ऐसे हैं, जिसे आर्यसमाज को अपनाना ही चाहिए । हम हमेशा अपनी गलती स्वीकार करने में भी देर नहीं करते न उनको छुपाते हैं या बचाव करते हैं । इसी कारण से हम हमेशा लचीले स्वभाव के बने रहते हैं ।

परख शक्ति :

आर्यसमाज के अनेक समर्पित व्यक्ति हुए तथा आज भी हैं जिन्हें अपने नाम की जरा भी नहीं पड़ी । हमने अपने कार्यकाल में ऐसे व्यक्तियों को पहचान कर उन्हें अपना आदर्श बनाया है । पर हमें कई ऐसे व्यक्ति मिले जो मंच तक तो ठीक लगे पर वे स्वयं व्यक्ति पूजा से घिरे दिखे, उन्हें आर्यसमाज के नाम का उपयोग कर स्वयं को प्रतिष्ठित कराते हुए देखा, ऐसे लोगों को हमारी पूरी टीम परख गई व हम उनसे तुरंत अलग हो गये अनेक आर्यसमाज के अधिकारियों में ऐसी परख शक्ति नहीं है इस लिए वे बाद में पछताते हैं । हम तो उस व्यक्ति का साथ देते हैं जो वैदिक धर्म की उन्नति में लगा हो और जो महर्षि दयानन्द के सपनों को साकार करने में पूर्ण समर्पित भाव से लगा हो ।

कुछ कर दिखाने की तमन्ना :

आर्यसमाज में अच्छे, रचनात्मक कार्य बहुत हो रहे हैं परंतु आर्यसमाज के लोग उन कार्यो की चर्चा कर गौरव की अनुभूति नहीं करते जब

कि निराशा की बातें व कमियों की चर्चाओं से आर्यसमाज में निराशा बढाते हैं।"आर्यसमाज में कुछ कार्य नहीं हा रहा " ऐसी निराशाजनक बात को सुलझाने में हम लगे हुए है और हमें गर्व है कि भूकम्प में कार्य करके एवं जीवनप्रभात के माध्यम से हमने यह बात सिद्ध कर दी है और जीवनप्रभात के बच्चों में से कई सुयोग्य बच्चे भविष्य में आर्यसमाज का गौरव देश - विदेश में बढ़ायेंगे।

इन निराधार बच्चों को गोद लेने के लिए हमें किसी ने बाध्य नहीं किया था परंतु इन बच्चों को अनेक विदेशी तथा विधर्मी संस्थाएँ ले जा रही थी इस चुनौती को स्वीकार करते हुए हमने इन्हें अपने पास रखा है और रखा भी है तो इतनी अच्छी तरह जैसे अपने घर के बच्चे रहते हैं। गुजरात के तत्कालीन राज्यपाल श्री कैलाशपति मिश्रजी जब बच्चों से मिलने आये थे तब उन्हों ने कहा कि **" मैंने मन में चित्र बनाया था कि भूकम्पग्रस्त बच्चों** से मिलने जा रहा हूँ उनकी मायूसी मुझसे देखी नहीं जायेगी लेकिन यहाँ उनसे मिलकर मुझे बेहद खुशी हो रही है - इन्हें आप जिस अच्छी तरह पाल रहे हैं तो कहने का मन होता है कि " अनाथ शब्द को शब्दकोश से हटा देना चाहिए।"

आदर सत्कार की भावना :

हमारी आर्यसमाज आने वाले प्रत्येक व्यक्ति का पर्याप्त सम्मान करती है, उनका परिचय प्राप्त करती है, उन्हें पर्याप्त समय देती है। साप्ताहिक सत्संग में आने वाले हर नये व्यक्ति का हम परिचय देकर स्वागत किया करते हैं जो अनेकों आर्यसमाज में नहीं होता। बाहर से आने वाले व्यक्तियों की निवास व भोजन की व्यवस्था का भी ध्यान रखते हैं। उनका पता हमेशा के लिए अपने कम्प्युटर में डाल देते हैं और उन्हें भविष्य के हर कार्यक्रम की जानकारी देते हैं। विदेश से आने वाले व्यक्तियों के पास समय बहुत कम होता है, हम उन्हें लेने एयरपोर्ट पहुंच जाते है व सब जगह घुमा कर पुनः एयरपोर्ट छोडने जाते हैं। विदेश से आने वालों के ठहरने के लिये एयरकंडीशन अतिथिगृह की व्यवस्था भी की है। हमारा स्वभाव हमेशा सहयोगियों तथा दानदाताओं के प्रति कृतज्ञता का रहा है। उनके साथ हमेशा मान - सम्मान का व्यवहार रहा है। इस कारण दानदाता शुभचिंतक लगातार बार - बार हमें सहयोग करते रहते हैं।

सहअस्तित्व में विश्वास :

समाज में अलग अलग मान्यता विश्वास वाले लोग रहते हैं - हम अपने प्रकल्पों हेतु सभी से सहयोग लेते है। उनका धन्यवाद करते हैं। उनसे सम्बंध रखते हैं। उन्हें अपने कार्यक्रमो में बुलाते हैं - उनके कार्यक्रमो में जाते है। वे आर्यसमाज के बारे में ज्यादा जानकारी प्राप्त करते है, आर्यसमाज के प्रति उनकी रूचि, उनका सम्मान बढ़ता है वे आर्यसमाज के प्रशंसक बन जाते हैं। हमने समाज में लोगों को जोडा हैं (+), (-) तोड़ा नहीं हैं। मंडन द्वारा (कार्य करके, आचरण करके) हम लोगों को अपना बनाते हैं।

प्रत्येक प्रतिभा को प्रोत्साहन :

हमारी आर्यसमाज में सामूहिक नेतृत्व है। कोई एक व्यक्ति ही जो चाहे करता रहे, ऐसा कभी नहीं होता। हर पदाधिकारी, हर शुभचिंतक की प्रतिभा का उपयोग हमने आर्यसमाज गांधीधाम के विकास में किया है। इस कारण वे प्रतिभाएँ हमारे साथ हमेशा हमेशा जुड़ी रहती हैं। और प्रतिभा का लक्ष्य एक ही है आर्यसमाज के कार्यक्रम आगे कैसे बढ़ें ? उसमें कैसे हम सहयोगी बनें ?

सारे प्रकल्प एक ट्रस्ट के अंतर्गत :

आर्यसमाजों ने अनेकों प्रकल्पों को पूरा किया है लेकिन अनुभव बताता है कि वे प्रकल्प जब पूरे हुए तो उनके संचालक भी स्वतंत्र बने व धीरे धीरे वे आर्यसमाज से स्वतंत्र रूप में कार्य करने लगे और आर्यसमाज को जो श्रेय - गौरव मिलना चाहिए था वह नहीं मिला। अनुभव के आधार पर हमने सारे प्रकल्प एक ट्रस्ट के अंतर्गत ही चलने दिये हैं। अलग समितियां अलग संचालक नहीं बनाये, पूरा नियंत्रण आर्यसमाज गांधीधाम के पदाधिकारियों का है। इस कारण आर्यसमाज गांधीधाम सशक्त बन कर सबके समक्ष प्रस्तुत है।

पदाधिकारियों में सातत्य :

हमारे पदाधिकारी हर तीन वर्ष में चुने जाते हैं वो भी सर्वसम्मति से। हम बार - बार प्रधान व मंत्री नहीं बदलते क्योंकि वे जिम्मेदारीपूर्वक काम कर रहे हैं लेकिन हमारे यहाँ Second Line Of Ledership भी मौजूद है जो अनेक कार्य स्वतंत्र रूप से करने का अनुभव प्राप्त करती जा रही है इसलिये उत्तराधिकारियों की कभी भी कमी महसूस नहीं होगी। हमारे यहाँ कोई भी अधिकारी पदलोलुप नहीं है। बडा दान देने वाला व्यक्ति ट्रस्टी बनने की शर्त पर दान देता है तो हम उसे नहीं स्वीकारते हैं।

भूकम्प ने हमारी दिशा व दशा बदल दी :

यदि भूकम्प न आया होता तो हमारी प्रसिद्धि हमारा कार्य विस्तार इतना न हो पाता। भूकम्प, विनाश के साथ चुनौती भी लाया था उस चुनौती को हमने स्वीकार करके व्यापक राहत व बचाव कार्य किया, साथ ही एक कठिन जिम्मेदारी असहाय बच्चों को पालने की सम्हाली तब हमारा परिचय बढा व हमारा बहुमुखी विकास हुआ।

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।।